H.W. 14/7/21

ODM CONNECT APP HOMEWORK

प्रश्न-1: आप अपने घर में अतिथियों का सत्कार कैसे करते हो?

उ) अतिथि सत्कार का भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान है। हमारे संस्कृति में तो अतिथि को भगवान का रूप माना जाता है। इसलिए मैं हिंदू धर्म का मान रखके अतिथियों का आदर सत्कार अच्छे तरह से करती हूँ। पहले मैं स्मित हास्यसहित हाथ जोड़कर नमस्कार कर अतिथियों का स्वागत करती हूँ। अगर उनके हाथ में कोई झोला होगा तो उसे विनम्रतापूर्वक उठाकर उचित स्थान पर रख देती हूँ। उन्हें आसंदी (कुर्सी) अथवा सुखासन (सोफा) दिखाकर बैठने की विनती करती हूँ। तत्पश्चात, पीने के लिए पानी देती हूँ। उनके बैठनेपर मैं उनके पास बैठ के उनकी यात्रा के बारे में पूछती हूँ। ऐसा करने से उनके प्रति आदर भाव व्यक्त होता है। अगर मेरी मम्मी मुझे चाय या कॉफी बनाने के लिए कहती है तो मैं तुरंत बनाकर मेहमान को देती हूँ। जब मेरे माता-पिता अतिथियों से बात करते हैं, तो मैं बीच में नहीं बोलती। यह भी आदर-सत्कार का एक अंग ही है। फिर जब अतिथि जाने के लिए खड़े हों, तो मैं भी खड़ी हो जाती हूँ। उन्हें विदा करते समय मैं उनके साथ कुछ दूर तक जाकर "अलविदा, फिर मिलेंगे" कहकर मैं अपने घर को लौट जाती हूँ।

प्रश्न-1: अतिथि तुम कब जाओगे पाठ में लेखक अतिथि का सत्कार कैसे किया?

उ) लेखक के घर जब अतिथि आता है तो लेखक मुसकराकर उसे गले लगाता है और उसका स्वागत करता है। उच्च-मध्यम वर्ग के परिवार के समान उसे डिनर करवाया तथा रात को सिनेमा भी दिखाने ले गया। उससे तरह-तरह के विषयों पर बातें करते हुए उससे सौहार्द प्रकट करते हैं। परंतु अतिथि का इतना देर रुकना लेखक और उनकी पत्नी को अच्छा नहीं लगा। बात करने का सारा विषय खत्म हो गया था। घर पर खिचड़ी जैसा साधा खाना बनने लगा। लेखक मन में सोचते थे "अतिथि, तुम कब जाओगे"।